RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2027-29

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 10 सोमवार 10 अगस्त 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

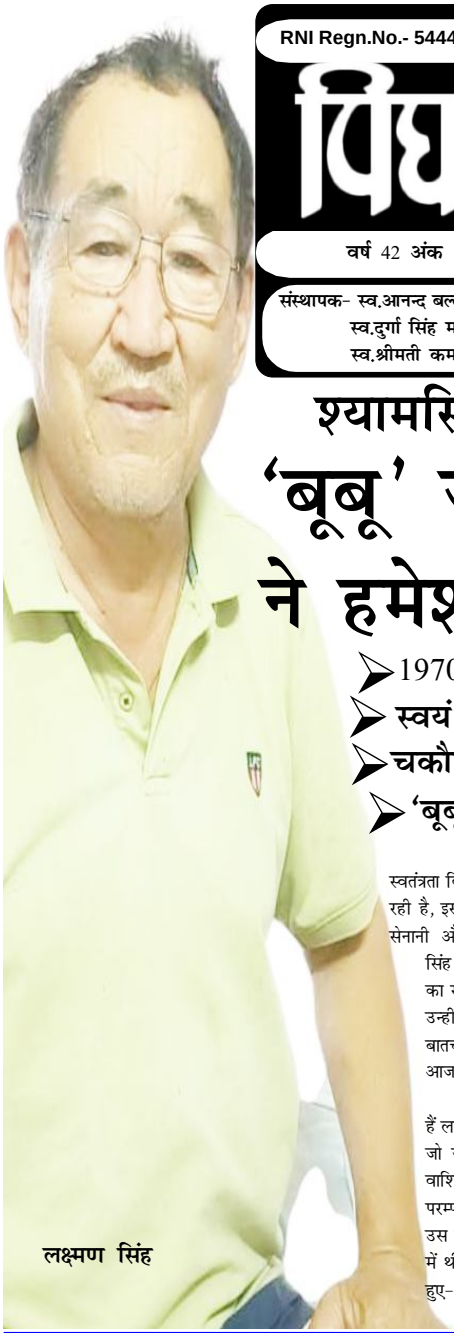

लक्ष्मण सिंह

श्याम सिंह

श्यामसिंह-लक्ष्मणसिंह से बातचीज

'बूबू' जोगा सिंह मर्तोलिया ने हमेशा समाज को सींचा

- 1970 में धारचूला में शुरू मिष्ठान वितरण जारी
- स्वयं धनराशि देकर दूसरों को प्रेरित करते रहे
- चकौड़ी में रामसिंह रोड का किस्सा आज भी है
- 'बूबू' नाम से धारचूला में आज भी है प्रसिद्धि

कार्यालय प्रतिनिधि

स्वतंत्रता दिवस के लिये देशभर में तैयारी हो रही है, इस अवसर पर सीमान्त के स्वतंत्रता सेनानी और महान समाजसेवी स्व. जोगा सिंह मर्तोलिया 'बूबू' का स्मरण करते हुए उन्हीं के बंशजों से बातचीज करते हुए आज की प्रस्तुति है।

बात शुरू करते हैं लछम सिंह जी से जो जोहार घाटी के वाशिंदे थे और उसी परम्परा में रमे थे जो उस दौर के व्यवहार में थी। इनके दो पुत्र हुए- जोगा सिंह और लाल सिंह। इनकी अगली पीढ़ी में जोगा सिंह जी घर में उखा देवी (जंगपांगी), कौशल्या देवी(धर्मशक्तू), श्याम सिंह, लक्ष्मण सिंह और लाल सिंह जी के घर में भगत सिंह, जानकी देवी (टोलिया) ने जन्म लिया। इनसे आगे की पीढ़ी में श्यामसिंह जी के घर पुष्पा (पांगती), निरंजन, कंचन (पांगती) और लक्ष्मणसिंह जी के घर डॉ.अमित, सुमित हैं।

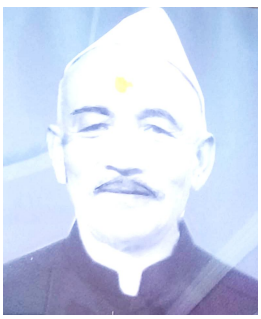

स्वतंत्रता सेनानी
स्व. जोगा सिंह मार्तोलिया

'बूबू' यानी जोगा सिंह जी का स्मरण उनके परिजन ही नहीं पूरा समाज भी करता है क्योंकि उन्होंने हमेशा समाज को सींचा। स्वतंत्रता सेनानी और

शेष पृष्ठ 2 पर

कपड़े वालों की यो गत भई

नत्थू का पेशा मछली पकड़ना रहा हो, ऐसी बात नहीं थी। उसका मुख्य काम तो खेती ही था परन्तु शुरू में वह शौकिया तौर पर जाल लेकर मछली पकड़ने जाता और धीरी-धीरे वह इस काम में इतना सफल रहा कि उसने इसे पेशा ही बना लिया। इसके लिए उसे एक सुविधा भी थी। उसका घर नदी किनारे पर ही था। उन दिनों एक लोकगीत भी मछेरों के बारे में मशहूर था- 'रात मछेरा माछि मार लौ, दीन सुखालो जाल'- अर्थात मछेरा रात में मछली पकड़ता तथा दिन में जाल सुखाता है। जल में मछलियाँ पकड़ने का उपयुक्त समय रात ही है, क्योंकि रात में मछलियाँ आसानी से जाल में आ जाती हैं। हाँ, जब नदी का पानी बारिश तथा बाढ़ से गदला हो जाए तो मछेरे दिन में भी नदी में जाल डालते हैं। नत्थू अपने धन्धे में सफल होते हुए भी इतना कंजूस था कि उसके बदन में एक छोटी चार अंगुली लंगोट के अलावा कभी कुछ नहीं रहता। कभी किसी ने उससे पूछा कि एक कपड़ा क्यों नहीं बना लेते तो वह तपाक से उत्तर देता, 'मछली भी क्या कोई कपड़े पहनती है? वह तो रात दिन पानी में ही रहती है। मैं तो थोड़े समय के लिये ही पानी में जाता हूँ। कपड़े पहन कर जाओ तो फिर नदी पर कपड़े उतारने का झंझट व किसी के द्वारा नदी तीर पर रखे कपड़ों को उठा ले जाने का डर अलग से। कुल मिलाकर स्थिति यह थी कि उसने कभी कोई पकड़ा नहीं बनाया। किसी ने अगर कोई कपड़ा पहिनने के लिये दिया भी तो वह अगले ही दिन नदारत मिलता। गर्मियों में बिना कपड़े पहने भी काम चल जाता परन्तु ठण्ड के दिनों में उसे ठिठुरते हुए लोगों ने कई बार देखा था। एक ऐसी ही पौष की ठण्डी रात में जब वह नदी पर जाल डालने गया तो बर्फीली व बदन को काट देने वाली ठण्ड हवाएँ चल रही थीं। उस रात नत्थे को भी बेहद ठण्ड लग रही थी। उसके बदन में कोई कपड़ा नहीं था।

उसके पास केवल जाल था। जाल अभी नदी में नहीं डाला गया था, इसलिये कोरा था। तभी बर्फीली हवा का झोंका उधर से गुजरने लगा। नत्थू ने पास में रखा जाल ओढ़ लिया परन्तु इससे भी जाड़ा नहीं रुक रहा था। उसको अचानक ध्यान आया कि और भी तो कई ऐसे लोग होंगे, जिनके बदन में कोई कपड़ा नहीं होगा। उसने अपनी तुलना उनसे कर डाली। ठिठुरते हुए और किटकिटाते हुए दाँतों को रोकने का प्रयास करते हुए उसने एक आह भरी और कहा- 'कपड़े वालों की यो गत भई, नंगों के क्या हाल।' उसने यह कहते हुए सन्तोष की साँस ही कि ठण्ड से जितना बुरा हाल उसका है, उससे कहीं अधिक बुरा हाल उन लोगों का होगा जिनके पास बदन ढकने को कुछ भी नहीं है। उसे भला कौन समझाता कि जाल ओढ़ने तथा कपड़ा न पहिने हुए होने में, कोई अन्तर नहीं है। जाल ओढ़ने से भी कहीं जाड़ा जा सकता है?

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

जेन-जी की ताकत को भुनाने की कोशिश

जेन-जी की ताकत को दुनिया देख चुकी है। नेपाल में हुए तख्ता पलट और श्रीलंका में हुए संग्राम के बाद भारत में हुए विशाल प्रदर्शन को देख 'जेज जी' की समझने और इसकी व्यख्या होने लगी है। रहन-सहन, खानपान से लेकर सोचने के तरीके में कितना बदलाव युगों से समय-समय पर होता रहा है, यह 'जेन-जी' के वर्तमान प्रदर्शनों से देखा जा सकता है। देश-दुनिया में हो रही अशान्ति को युवा मन समझ रहा है और चाहता है सकून की दुनिया हो, दल और नेता किस प्रकार से युवाओं का इस्तेमाल अपने लिये करते हैं इसे भी जेन-जी समझ रहे हैं। समूह में सड़क पर उतर ही इस शक्ति की अपनी भाषा और अपने तरीके हैं, वह रटे-रटाये ढर्रे पर नहीं चल रहे। इससे वह अशिष्ट भी कहे जा रहे हैं लेकिन जैसे को तैसा कहते हुए यह अपनी बात कर रहे हैं और मानने को तैयार नहीं है। 'जेन-जी' की यह लड़ाई इतनी ही नहीं है, यह पूरी दुनिया में नई उपज हो चुकी है।

अब यदि इसे भारतवर्ष के परिप्रेक्ष्य में ही देखें तो भूख और भ्रष्टाचार की कहानी सुन-सुन कर जेन-जी ऊब चूके हैं, उनके पास समय नहीं है, वह मेहनत के साथ परिणाम भी चाहते हैं। यही कारण है राजनीति की बनावटी बातें इन्हें पच नहीं रही और यह सड़कों पर उतरने लगे हैं। दिल्ली में हुए प्रदर्शन के लिये कभी सोचा भी नहीं गया था। अब यदि इसे उत्तराखण्ड के स्तर पर विचार करें तो दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों तक भी युवाओं ने भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाकर प्रदर्शन किया है। इसका मतलब है जो चिंगारी लगी है वह पूरे प्रदेश-देश-विश्व तक है।

ऐसे में राजनीतिक दलों ने नए सिरे से अपनी रणनीति बनानी शुरू कर दी है। अब यह 'जेन-जी' की ताकत को भुनाने की कोशिश कर रहे हैं। 18 **से** 29 **साल के छात्रों, प्रोफेशनल्स व बेरोजगारों से अपने को प्रभावी तरीके से जोड़ने के लिये देश की बड़ी पार्टियां जुटी हैं। इसका सीधा सा मतलब है आने वाले समय में नए विचारों के साथ बात आगे बढ़ने वाली है।**

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

क्वेटा, कराची चौकी से गायब किया

बलूचिस्तान। पाकिस्ता के क्वेटा, कराची और हब चौकी से 6 लोगों को गायब की करने की सूचना है। सुरक्षा बलों ने क्वेटा में एयरपोर्ट रोड के पास घरों पर छापेमारी की और जबरदस्ती उठा कर ले गये। ऐसे में बलूच यकजेहती कमेटी ने वैश्विक अभियान की घोषणा की है।

जासूसी करने सन्देह में इंटर्न गिरफ्तार

ब्रसेल्स। बेल्जियम के अधिकारियों ने नाटो के रणनीतिक मुख्यालय में कार्यरत कनाडाई मूल की चीनी इंटर्न को जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। आरोपी पर किसी तीसरे देश के लिए जासूसी करने का आरोप है।

अंतरिक्ष कचरे की निगरानी को प्रक्षेपण

बीजिंग। चीन ने अन्तरिक्ष कचरे की निगरानी और 24 घण्टे सभी कक्षाओं में लक्ष्यों का पता लगाने के लिये अपने पहले वाणिज्यिक उपग्रह नेटवर्क गैंडे कॉन्स्टलेशन का प्रक्षेपण शुरू कर दिया है। यह मिशन तीन चरणों में पूरा किया जायेगा। इसके 2030 तक पूरा होने की उम्मीद है।

चुनाव में दखल के आरोप पर ठनी

रियो डी जेनेरियो। ब्राजील ने अमेरिका के दो अधिकारियों के वीजा एप्लीकेशन खारिज कर दिए हैं क्योंकि उन्हें डर था कि उनके दौरे से ब्राजील के चुनावी सिस्टम पर सवाल उठाने वाले समूह को समर्थन मिल सकता है।

रचनात्मकता को दबाया नहीं जा सकता

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने एनिमेटेड फिल्म महाप्रभु जगन्नाथ की रिलीज को चुनौती देने वाली ओडिशा सरकार की संशोधन याचिका को खारिज करते हुए कहा कि कला, संस्कृति और रचनात्मकता को केवल इसलिए नहीं दबाया जा सकता क्योंकि कुछ लोग देवी-देवताओं के चित्रण को लेकर आपत्ति जता रहे हैं। कोर्ट ने अपने पिछले आदेश में बदलाव करने से इन्कार किया।

बांग्लादेश में बर्बर अत्याचार

ढाका। अदालत के आदेश के विपरीत बांग्लादेश के एक हिन्दू परिवार पर भीषण हमला कर उन्हें प्रताड़ित किया गया। बांग्लादेश के भोला जिले के लालमोहन उपजिला में हुई क्रूर घटना में एक भूमि विवाद के चलते गोपाल कृष्ण दास और अपने पूरे परिवार समेत हिंसा का शिकार हुए। बताया जाता है कि भूमि विवाद मामले में अदालत का पक्ष के निर्णय के बावजूद उनपर हिंसक हमले हुए।

फसक

दाज्यू, तिलचट्टों की अपनी ही लीला होने वाली ठैरी

दवा-दारू का असल भी हर जगह नहीं होता है बल

दाज्यू, देशभर में सीजेपी का हल्ला मचा हुआ है। हमारे मोहल्ले में बीरु कह रहा है- 'अब मैं कॉकरोच पार्टी का हो गया हूँ। नसों में घुस जाऊँगा।' दाज्यू, पार्टी के बारे में हमें तो बस इतना पता है कि दिल्ली में भयंकर आन्दोलन हुआ और शिक्षा मंत्री धमेन्द्र प्रधान को इस्तीफा देना पड़ा। जबकि तिलचट्टों की अपनी लीला होने वाली ठैरी। पढ़ने-लिखने वाले भव्वा जैसे बच्चों के अलावा खिलन्दर भी दिल्ली में प्रदर्शन करने पहुँच गये थे। दाज्यू, रसोईघर में भी चिलचट्टों की बहार होती है। कितना ही कुछ कर लो ये उजड्ने से रहे। बहुत जहरीली दवाएं बाजार में हैं लेकिन दवा-दारू का असर भी हर जगह नहीं होता है बल।

शिक्षा मंत्री के इस्तीफे के बाद कॉकरोच जनता पार्टी का आन्दोलन सिमटा लेकिन नेता फैलते जा रहे हैं। युवाओं पर पुलिस द्वारा किये गये लाठीचार्ज को लेकर संसद में चुंचाट खूब हुई। अपने शहर में भी लड़के झण्डे-डण्डे लेकर भूंभाट कर रहे हैं।

सुप्रीम कोर्ट कह चुकी है- 'शान्तिपूर्ण प्रदर्शन का अधिकार संविधान प्रदत्त है और किसी आन्दोलन का हवाला देकर पुलिस की ज्यादातियों या लाठीचार्ज को उचित नहीं ठहराया जा सकता।' दाज्यू, अपने प्रदेश के प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रश्नपत्र लीक के आरोपी निजी इंजीनियरिंग कालेक के सहायक प्रोफेसर पर सभी शैक्षणिक कार्यों के लिये आजीवन प्रतिबन्ध लगा दिया है। पता नहीं गोपनीयता का कैसा गोपन हो रहा है। हल्द्वानी जेल में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की मदद से अपराधी सेल्फ स्टडी के बाद ग्रजुएट करने की तैयारी कर रहे हैं। शिक्षा अधिकार भरपूर ठैरा महाराज। रामनगर नगर पालिका के सभासद समीम अहमद ने पालिका पर गम्भीर आरोप लगाया है कि बोर्ड की अनुमति के बिना जेम पोर्टल से लाखों-करोड़ों की सामग्री खरीदी जा रही है। दाज्यू, कितनी और किनकी दवा की जाए, समझ नहीं आ रहा है।

राज्यपाल ने भीमताल के एक आयोजन में कहा- 'अनुसंधान व नवाचार को फार्मेसी अकादमिक ब्लाक नई दिशा देगा।' दाज्यू, हम सब चाहते हैं युवाओं को नई दिशा मिल और समाज को भी लेकिन विश्वविद्यालय में प्रवेश-परीक्षा का झाला हो रहा है। सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के परीक्षाफल में नम्बर या नाम आदि को लेकर बार-बार गड़बड़ हो जा रही है। फिर छात्र-छात्राएं दौड़ते रहते हैं बल। और छात्र नेताओं को तो मौका मिल ही जाता है। समाजसेवा भी करनी ठैरी। किच्छा के सूरजमल कालेज को आईएनसी की मान्यता नहीं मिली है। इसको लेकर छात्र आन्दोलन कर रहे हैं। नर्सिंग के छात्र-छात्राओं ने तालाबन्दी भी कर दी। दाज्यू, क्या-क्या जो नहीं हो रहा है। -तुम्हारा भुली झकरुवा

जोगा सिंह मर्तोलिया.

प्रथम पृष्ठ का शेष

समाजसेवी के रूप में उनकी ख्याति है। मात्र 16 साल की आयु में ही इन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन की राह पकड़ ली थी। 1936 में सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय जोगा सिंह को 21 फरवरी 1941 को शामा (कपकोट) से गिरफ्तार किया गया। अल्मोड़ा कारागार फिर बरेली जेल में उन्हें रखा गया। 1942 में अपने गाँव सुरिंग में उन्हें गिरफ्तार कर अल्मोड़ा फिर सीतापुर कारागार में यातनाएं दी गई।

जोगा सिंह के ज्येष्ठ पुत्र श्याम सिंह मर्तोलिया सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य हैं। इनका विवाह धमोत परिवार में हुआ। विशन सिंह धर्मशक्तू-श्रीमती जसोदा देवी की सुपुत्री राधा देवी सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य इनकी पत्नी हैं। अपने मुनस्यारी में बिताए बचपन और पिता की ढेरों यादों के साथ श्याम सिंह जी उन्हीं सिद्धान्तों में रमे हैं। बचपन की शिक्षा के बाद श्याम सिंह जी ने पिथौरागढ़ से कालेज और रामपुर से शारीरिक शिक्षा की दीक्षा ली। जीआईसी कालिका (धारचूला) से प्रधानाचार्य के रूप में सेवानिवृत्त हुए। इसी प्रकार जोगा सिंह जी के दूसरे सुपुत्र लक्ष्मण सिंह जी पॉलिटेक्निक करने के बाद ओएनजीसी मुम्बई से चीफ इंजीनियर पद से सेवानिवृत्त होकर बहुत ही कर्मठ व्यक्तित्व के रूप में जाने जाते हैं।

मर्तोलिया बन्धु श्यामसिंह-लक्ष्मण सिंह बातचीज करते हुए इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त करते हैं कि पिता जोगा सिंह द्वारा धारचूला में जो मिष्ठान वितरण कार्यक्रम शुरू किया था, वह आज तक अनवरत जारी है। स्वतंत्रता सेनानी जोगा सिंह ने 1970 में धारचूला में मिष्ठान वितरण के लिये तीस हजार रुपये की एफडी करवाई जो बाद में पचास हजार कर दी गई, उससे प्राप्त व्याज से प्रतिवर्ष स्वतंत्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस पर मिष्ठान वितरण होता है। बूबू के नाम से यह आयोजन प्रशासन करवाता है जिसका जिम्मा चैयरमैन और एसडीएम को है।

आजादी के बाद सन् 1950 में जोगा सिंह जी को भारत-तिब्बत सीमा पर स्थित एक चैकपोस्ट पर हेडकांस्टेबल के रूप में नियुक्त किया गया। अपनी अनुशान प्रिय छवि के कारण 'हेड साहब' नाम से जोहार घाटी में जाने जाते थे। उनकी स्मृति में धरचूला में एक मार्ग का नाम 'जोगा सिंह मर्तोलिया मार्ग' रखा गया है। नौकरी के सिलसिले में वह धारचूला सहित कई जगह रहे। थल, चकौड़ी में उन्हें इस बात के लिये आज भी याद किया जाता है कि वह बेहद सख्त थे। उन दिनों गिने चुने वाहन चलते थे और उनका निश्चित समय था, समय से आगे-पीछे सड़क पर वाहन को रोक दिया जाता। एक ट्रक चालक राम सिंह को वाहन लेकर थल से बागेश्वर जाना था लेकिन बूबू के डर से वह सड़क पर ट्रक ला नहीं पा रहा था तो उसने गधेरा पार कर जंगल से अपना वाहन निकाल दिया। कई दिनों तक मुख्य मार्ग पर ट्रकों के न दिखाई देने और उनके गन्तव्य तक चले जाने की सूचना पर बूबू ने पड़ताल की तो पता चला कि जंगल होते हुए एक नया रास्ता वाहन निकालने के लिये बना दिया गया और सब उसी से होकर जा रहे हैं। इस मार्ग का नाम ही राम सिंह रोड रख दिया गया, उस किस्से को आज भी लोग याद करते हैं।

धारचूला में 'बूबू' नाम से प्रसिद्धि रखने वाले जोगा सिंह ने हर उस जगह सेवाभाव से कार्य किया जहाँ वह रहे या गये थे। धारचूला में पुस्तकालय स्थापित कर लोगों को पुस्तकों से जोड़ने वाले मर्तोलिया जी स्वयं की धनराशि देकर भी वह लोगों को आगे आने के लिये प्रेरित करते रहे। मर्तोलियाओं में अपने 'राछू राठ' को एकजुट कर उन्होंने उस दौर में एक लाख की धनराशि जमा करते हुए एक कोष बनाकर सहयोग करने को कहा ताकि कन्या विवाह या किसी विशेष परिस्थिति में उस कोष से लोगों को मदद मिल सके। वर्तमान में राछू राठ में 40 परिवार एकजुट हैं। इसी प्रकार मुनस्यारी के विवेकानन्द विद्या मन्दिर स्कूल में दो कक्षों का निर्माण करने में मदद की। इसके लिये स्वयं सामग्री ढोने से लेकर सहयोग राशि उन्होंने दी।

समाज के लिये आजीवन कुछ करने की चाह रखने वाले बूबू का परिवार भी उस परम्परा को आगे बढ़ा रहा है। अपनी संस्कृति और व्यापार के अलावा इस परिवार का सामाजिक योगदान भरपूर है। श्याम सिंह-लक्ष्मण सिंह मर्तोलिया सामाजिक कार्यों में अग्रणीय हैं। परिवार के निरंजन मर्तोलिया धारचूला में अपने व्यवसाय के साथ बेहद सक्रिय हैं। सुमित मर्तोलिया चकौड़ी में सक्रिय हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दशा और दिशा

हिंसा से नहीं सम्वाद से सशक्त होगा लोकतंत्र

जंतर-मंतर में लोकतन्त्र का नया चेहरा?

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

दिल्ली के जन्तर-मन्तर से संसद भवन तक हाल के आन्दोलन के दौरान जो तनाव, टकराव और हिंसक घटनाएं देखने को मिलीं, वे केवल कानून-व्यवस्था का प्रश्न नहीं हैं बल्कि भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता पर भी गम्भीर प्रश्नचिह्न लगाती हैं। पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच टकराव, बैरिकेड तोड़ने के प्रयास, मेट्रो स्टेशन में जबरन प्रवेश की कोशिश, पुलिस द्वारा लाठीचार्ज और आंसू गैस का प्रयोग- ये सभी दृश्य उस लोकतांत्रिक संस्कृति के अनुरूप नहीं कहे जा सकते, जिसकी आधारशिला अहिंसा, सम्वाद और संवैधानिक मर्यादाओं पर रखी गई है।

भारत आज आजादी के शताब्दी वर्ष 2047 की ओर बढ़ रहा है। यह केवल आर्थिक महाशक्ति बनने का लक्ष्य नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक परिपक्वता की कसौटी पर भी स्वयं को सिद्ध करने का अवसर है। यदि हम आज भी असहमति को हिंसा, टकराव और अराजकता के माध्यम से व्यक्त करेंगे तो लोकतंत्र की आत्मा कमजोर होगी। लोकतंत्र की शक्ति सड़क पर शक्ति प्रदर्शन में नहीं, बल्कि विचारों की शक्ति, सम्वाद की संस्कृति और संवैधानिक प्रक्रियाओं में निहित होती है।

नीट पेपर लीक प्रकरण को लेकर चल रहे घरना-प्रदर्शन के दौरान अचानक अपने सहयोगी सांसदों के साथ प्रधानमंत्री आवास के निकट धरने पर बैठना और संसद की बजाय सड़क को राजनीतिक संघर्ष का मंच बनाना अनेक गम्भीर प्रश्न खड़े करता है। जिस प्रकार इससे पहले कॉकरोच जनता पार्टी के तथाकथित छात्रों एवं कार्यकर्ताओं ने संसद चलो मार्च के दौरान तनावपूर्ण, अराजक एवं हिंसक माहौल बनाने की घटनाएं सामने आईं, उससे यह आशंका बलवती हुई कि कुछ राजनीतिक शक्तियां भारत मेंभी नेपाल जैसी अराजक परिस्थितियां पैदा करने को उजावले हैं। सरकार की सतर्कता और सुरक्षा एजेंसियों की समय रहते की गई कार्रवाई से, कुछ कमियों के बावजूद, इस बड़े संकट को टाल दिया गया अन्यथा दिल्ली लम्बे समय तक हिंसा और अशान्ति की चपेट में आ सकती थी। देश पहले भी नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के विरोध के दौरान शाहीन बाग में लगभग सौ दिनों तक एक प्रमुख सड़क के अवरुद्ध रहने और उससे आम नागरिकों को हुई भारी कठिनाइयों का अनुभव कर चुका है। लोकतंत्र में असहमति और विरोध का अधिकार निर्विवाद है, लेकिन उसका स्थान संसद, सम्वाद और संवैधानिक संस्थाएं हैं न कि सड़क पर टकराव और अराजकता। विपक्ष यदि बार-बार ऐसे आन्दोलनों को प्रोत्साहित करता है तो यह प्रश्न स्वाभाविक है कि उसका उद्देश्य लोकतांत्रिक विमर्श को मजबूत करना है या राजनीतिक ध्रुवीकरण और अस्थिरता को बढ़ावा देना। जनता अपेक्षा करती है कि सभी दल संसद को सर्वोच्च मंच मानते हुए वहीं जवाबदेही सुनिश्चित करें। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19 प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा शान्तिपूर्ण और निरस्त्र सभा करने का अधिकार देता है। यह अधिकार लोकतंत्र की सबसे बड़ी पहचान है किंतु प्रत्येक अधिकार के साथ कर्तव्य और मर्यादा भी जुड़ी होती है। प्रदर्शन करना लोकतांत्रिक अधिकार है लेकिन सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाना, पुलिस से टकराव करना, हिंसा फैलाना अथवा आम नागरिकों के जीवन को बाधित करना किसी भी दृष्टि से लोकतांत्रिक आचरण नहीं कहा जा सकता। यदि आन्दोलन अपनी नैतिक शक्ति खो देता है तो उसकी मांगें भी समाज की सहानुभूति खो बैठती हैं। यह भी उतना ही सत्य है कि लोकतंत्र केवल जनता के लिए नहीं, बल्कि सरकार के लिए भी उत्तरदायित्व का नाम है। सरकार को भी आन्दोलनों को केवल कानून- व्यवस्था की समस्या मानकर नहीं देखना चाहिए। जब भी किसी वर्ग, विशेषकर युवाओं और छात्रों में असन्तोष उत्पन्न हो, तो उसका समय रहते समाधान खोजने का प्रयास होना चाहिए।

नई दिल्ली का जंतर-मंतर बगावत के एक रंगीन मेले में बदल गया। जेन ज़ी के नौजवान गा रहे थे, नाच रहे थे, मीम्स बना रहे थे, ताकतवर नेताओं का मज़ाक उड़ा रहे थे और बर्गर, पिज़्ज़ा, भटूरे खाते हुए ऐसे मस्ती कर रहे थे, मानो राजनीति किसी कॉलेज फेस्ट में आ घुसी हो। लेकिन इस हंसी-मज़ाक और शोर-शराबे के पीछे एक साफ और मजबूत पैगाम था जवाबदेही चाहिए। हिंसा भी इस आन्दोलन का जोश कम नहीं कर सकी। युवाओं के नए जत्थे लगातार पहुँचते रहे। बेखौफ, पूरे हौसले के साथ। देखते ही देखते यह धरना लोकतंत्र के एक जीवन्त उत्सव में बदल गया। यह युवा आन्दोलन भारत के लोकतांत्रिक सफर का एक अहम पड़ाव बन गया। शुरुआत परीक्षा व्यवस्था के खिलाफ गुस्से से हुई थी लेकिन जल्द ही यह एक बड़े सन्देश में बदल गई। देश के युवाओं की आवाज़ को अब नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता।

जिस जन दबाव के बाद धर्मेन्द्र प्रधान को पद छोड़ना पड़ा, प्रधानमंत्री से इंस्टाग्राम पर सीधे युवाओं से सम्वाद की मांग उठी और नन्दन नीलेकणी समेत विशेषज्ञों की टास्क फोर्स बनाने का फैसला हुआ, उसने एक बात साबित कर दी। शान्तिपूर्ण, संगठित और स्पष्ट जनदबाव सरकारों को फैसले बदलने पर मजबूर कर सकता है। इस आन्दोलन ने सोशल मीडिया की असली ताकत भी दिखा दी। जो काम कभी बड़े मीडिया संस्थान तय करते थे, वह इस बार इंटरनेट ने किया। कहानी वहीं बनी, वहीं फैली और वहीं से पूरे देश तक पहुँची। पारम्परिक मीडिया को युवाओं के पीछे-पीछे चलना पड़ा।

जेन ज़ी की अपनी अलग भाषा थी बेबाक, सहज, प्रतीकों और व्यंग्य से भरी। उसने राजनीतिक आन्दोलनों के पुराने तौर-तरीकों को तोड़ दिया। यह आन्दोलन किसी पार्टी का नहीं, बल्कि भरोसा खो चुके छात्रों और युवाओं का आन्दोलन बन गया। पहली बार बड़ी संख्या में डिजिटल पीढ़ी ने लोकतंत्र को सड़क और स्क्रीन दोनों पर एक साथ जिया। सरकार ने समय रहते कुछ कदम उठाए, जिससे तनाव और नहीं बढ़ा। इस पूरे घटनाक्रम ने लोकतंत्र की एक पुरानी सच्चाई फिर याद दिला दी। शान्तिपूर्ण जनआन्दोलन लोकतंत्र के लिए खतरा नहीं, बल्कि उसकी सबसे बड़ी ताकत होते हैं। नीट विवाद प्रधानमंत्री सरकार के सामने केवल एक प्रशासनिक चुनौती नहीं था। यह भरोसे का संकट बन गया। करोड़ों परिवार शिक्षा को अपने बच्चों के बेहतर भविष्य की सीढ़ी मानते हैं। जब उसी व्यवस्था पर सवाल उठते हैं, तो केवल परीक्षा नहीं, पूरे सिस्टम की विश्वसनीयता कटघरे में खड़ी हो जाती है। कई वर्षों तक प्रधानमंत्री ने एक आत्मविश्वासी और सक्षम भारत की छवि गढ़ी। लेकिन नीट विवाद ने उस तस्वीर में दरार डाल दी। पेपर लीक, गड़बड़ियों और प्रशासनिक अव्यवस्था के आरोपों ने राष्ट्रीय परीक्षा की साख पर गम्भीर सवाल खड़े कर दिए। संकट आना किसी भी सरकार के लिए असामान्य नहीं होता। असली परीक्षा संकट के समय नेतृत्व की होती है। जनता गलती से कम, उसे छिपाने या टालने से ज्यादा नाराज होती है। ऐसे समय में पारदर्शिता, सम्वेदनशीलता और तेज कार्रवाई ही भरोसा लौटाती है। लेकिन इस मामले में सरकारी प्रतिक्रिया अक्सर बचाव वाली जूयादा और समाधान वाली कम दिखाई दी। इससे लोगों का संदेह और गहरा हुआ। संसदीय लोकतंत्र में मंत्री कई बार अपने विभाग की नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार करते हुए पद छोड़ देते हैं, चाहे व्यक्तिगत गलती सिद्ध न हुई हो। ऐसे फैसले लोकतंत्र को कमज़ोर नहीं, बल्कि मज़बूत करते हैं क्योंकि वे जनता को यह भरोसा देते हैं कि सत्ता जवाबदेह है। इस विवाद ने एक और खतरे की ओर संकेत किया। लगातार चुनावी सफलताएं कई बार सरकारों को यह भरोसा दिला देती हैं कि जनता हमेशा उनके साथ रहेगी। यहीं से आत्मविश्वास और अति-आत्मविश्वास के बीच की रेखा धुंधली होने लगती है। लोकतंत्र में सवाल पूछने वालों को विरोधी नहीं, चेतावनी देने वाला समझना चाहिए। भारतीय परम्परा भी यही संदेश देती है। सत्ता के मद में चूर इन्द्र को अंततः बालक कृष्ण के सामने झुकना पड़ा। नारद मुनि का अहंकार भी टूटा। रामायण का धोबी याद दिलाता है कि शासक सबसे साधारण नागरिक की आवाज भी अनसुनी नहीं कर सकता। इतिहास और पुराण दोनों कहते हैं, अहंकार निर्णय क्षमता को धुंधला कर देता है, जबकि विनम्रता रास्ता दिखाती है। आज किसी भी सरकार की आँखें और कान केवल उसके अधिकारी नहीं होते। स्वतंत्र संस्थाएं, मीडिया, विशेषज्ञ और नागरिक समाज भी उतने ही महत्वपूर्ण होते हैं। जब ये आवाजें अनसुनी होने लगती हैं, तब सरकारें अपने ही बनाए घेरे में कैद हो जाती हैं। फिर केवल वही सुनाई देता है, जो अच्छा लगता है। असुविधाजनक सच बहुत देर से सामने आता है। 1975 का आपातकाल भी सत्ता और जनता के बीच बढ़ती दूरी की चेतावनी था। परिस्थितियां आज अलग हैं, लेकिन लोकतंत्र का सबक वही है। सत्ता का केन्द्रीकरण, आलोचना की उपेक्षा और अति-आत्मविश्वास अन्ततः किसी भी सरकार को भारी पड़ सकते हैं। जन्तर-मन्तर का यह आन्दोलन शायद आने वाले वर्षों में केवल नीट विवाद के लिए याद न रखा जाए। सम्भव है, इतिहास इसे उस पल के रूप में याद करे, जब भारत की डिजिटल पीढ़ी ने पहली बार लोकतंत्र को नई भाषा, नई ऊर्जा और नई शैली दी। सत्ता बदलती रहती है, लेकिन जनता की आवाज़ अन्ततः सबसे ऊँची होती है। तालियां कुछ समय तक अहंकार का साथ दे सकती हैं, पर भरोसा केवल विनम्रता, ईमानदारी और जवाबदेही से ही जीता जाता है। इस पूरे घटनाक्रम का सबसे खूबसूरत पहलू यह है कि अन्दोलन कर रहे छात्र कोई विरोधी नहीं, बल्कि भारत के भावी नीति-निर्माता, वैज्ञानिक, उद्यमी और भावी नेतृत्व हैं।

ज्योतिष की बातें 293

इस सप्ताह किसी भी ग्रह का राशि परिवर्तन नहीं हो रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह गुरु उच्चराशि कर्क में, सूर्य मित्रराशि कर्क में, शनि समराशि मीन में, मंगल व बुध शत्रुराशि मिथुन व कर्क में क्रमशः, शुक्र नीचराशि कन्या में गोचर करेंगे तथा चन्द्रमा इस सप्ताह मिथुन, कर्क, सिंह व कन्या राशि में क्रमशः गोचर करेगा। सभी सप्तग्रह उदय तथा शनि वक्री रहेगा।

11 अगस्त 2026 को गुरु कर्क राशि पूर्व दिशा में उदय हो जाएगा अतः अब गृह प्रवेश आदि शुभ कार्य प्रारम्भ हो जाएंगे।

लघु शिवरात्रि- श्रावण कृष्ण पक्ष चतुर्दशी निशीथ व्यापिनी तिथि को लघु शिवरात्रि पर्व होता है। तदनुसार मंगलवार 11 अगस्त 2026 को लघु शिवरात्रि पर्व रहेगा। श्रावण मास में सम्पूर्ण भारतवर्ष में काँवड़ यात्राएँ निकलती हैं। गंगा आदि पवित्र नदियों का जल काँवड़ में लाकर इसी लघु शिवरात्रि के दिन शिव मन्दिर में भगवान शंकर का उसी पवित्र जल से अभिषेक किया जाता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार 276

बचपन में ही जवानी

पहले लगभग 12 वर्ष में लड़कियों और 16 वर्ष में लड़कों में युवावस्था के लक्षण दिखाई पड़ते थे लेकिन अब लड़कियों में कहीं-कहीं तो 8-10 वर्ष में ही युवावस्था के लक्षण आने लगे हैं। इस सम्बन्ध में लोगों का मत है कि सामाजिक वातावरण, व्हाट्सएप फेसबुक आदि सोशल मीडिया और बच्चों के द्वारा मोबाइल का अत्यधिक उपयोग करने के कारण ऐसा हो रहा है। लेकिन मेरे विचार से मुख्य कारण दूसरे ही हैं।

1. आजकल जानवरों में दूध उतारने के लिए ऑक्सीटोसिन नामक इंजेक्शन दिया जाता है जिसका प्रभाव उस दूध में आ जाता है और इस दूध को बच्चे पीते है। इस कारण भी युवावस्था शीघ्र आती है।
2. फलों व सब्जियों की शीघ्र पैदावार बढ़ाने के लिए अर्थात् जल्दी जवान करने के लिए और फलों को शीघ्र पकाने के लिए कैल्शियम कार्बाइड आदि रसायनों का उपयोग किया जाता है। उन फलों सब्जियों का सेवन करने से उनमें उपस्थित कार्बाइड का प्रभाव हमारे शरीर में होता है। इस कारण फलों और सब्जियों की तरह बच्चे भी शीघ्र जवान होने लगे हैं।
3. आजकल डॉक्टर हर बीमारी में स्टेरॉयड का उपयोग धड़ल्ले से कर रहे हैं। इस स्टेरॉयड के उपयोग से भी बच्चे जल्दी जवान हो रहे हैं।
4. आजकल माता-पिता भी अपने बच्चों को शीघ्र हृष्ट-पुष्ट, लम्बे-चौड़े और ताकतवर बनाने के लिए खूब पौष्टिक आहार और फूड सप्लीमेंट खिला रहे हैं। इस कारण भी बच्चे बचपन में ही जवान हो जा रहे हैं। यदि आप चाहते हैं कि बच्चे बचपन में ही जवान न हों यथोचित समय पर ही युवावस्था के लक्षण उनके शरीर में प्रकट हों तो उपरोक्त चारों कारणों का निवारण करना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

बदरीनाथ चढ़ावा चोरी प्रकरण में मूर्ति, नाग और नेपाली करेंसी बरामद

चमोली। बदरीनाथ धाम में चढ़ावा चोरी प्रकरण में छानबीन चल रही है। एसआइटी ने मुख्य आरोपित वैयक्तिक सहायक प्रमोद नौटियाल के बदरीनाथ स्थित आवास से भगवान नारायण की चांदी की मूर्ति, नाग और नेपाली करेंसी बरामद की। नौटियाल को रिमाण्ड में लेने के बाद एसआइटी उनके सभी ठिकानों में तलाशी ले रही है। बदरी-केदार मन्दिर समिति कार्यालय में भी तलाशी ली गई।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नगर निगम अल्मोड़ा घाटे का बजट पेश

अल्मोड़ा। नगर निगम अल्मोड़ा की बोर्ड बैठक में इस वित्तीय वर्ष के लिए 37.15 लाख रुपये का घाटे का बजट पेश किया गया। अनुमानित आय 36 करोड़ 32 लाख रुपये आंकी गई जबकि व्यय इससे अधिक प्रस्तावित होने पर सदन में बजट पर चर्चा हुई। बैठक में अतिक्रमण, पार्किंग, स्ट्रीट लाइट, जलापूर्ति, सफाई व्यवस्था पर जोर देने की बात कही गई।

रामनगर में होगा फुट ओवरब्रिज तैयार

रामनगर। रामगर रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा के लिये अत्याधुनिक फुट ओवरब्रिज के लिये करीब ढाई करोड़ रुपये मंजूर हुए हैं। ब्रिज का निर्माण मार्च 2027 तक होने की उम्मीद है। इसके बनने से पर्यटन सीजन में यात्रियों को सुविधा होगी।

चेकिंग सरल करने की मांग उठाई

बनबसा। भारत-नेपाल सीमा पर आवागमन और व्यापार सरल बनाने के लिये दोनों देशों के कारोबारियों और सुरक्षा एजेंसियों की बैठक में व्यापारियों ने समस्यायें रखीं और सीमा पर चेकिंग को आवश्यक बनाने के साथ ही इसके सरलीकरण की मांग उठाई। नेपाली व्यापारियों ने बनबसा बैराज गेट सुबह 6 बजे की जगह 5 बजे खोलने की मांग भी की।

कपकोट-पिंडारी मार्ग में अवरोध

बागेश्वर। लगातार बारिश से कपकोट-पिंडारी, खड़लेख-भनार, खातगांव-देव तोली, मिकिलाखपट्टा में अवरोध हो रहा है। पूर्व विधायक ललित फर्स्वाण ने इन क्षेत्रों का निरीक्षण करते हुए बताया कि मार्गों की हालत देखते हुए ग्रामीणों का राशन, गैस लाना दूभर हो गया है। बच्चों का स्कूल जाना व ग्रामीणों का बाहर जाना दिक्कत में है। फल्यांट‌ की प्रधान सोनू देवी ने बताया कि फल्यांटी का मुख्य मार्ग भी दिक्कत में है।

आन्तरिक मार्गों में ई-रिक्शा की मांग

अल्मोड़ा। वरिष्ठ नागरिकों की डे-केयर संस्था की बैठक में मुख्यालय की आन्तरिक सड़कों पर ई-रिक्शा संचालन विस्तार की मांग की गई। साथ ही बाजार क्षेत्र में दो पहिया वाहनों पर रोक को कहा गया।

सरकार से मांगी जांच रिपोर्ट

नैनीताल। हाईकोर्ट ने काशीपुर स्थित द्रोण सागर की भूमि पर अतिक्रमण और परिसर में स्थित मन्दिरों में आने वाले चढ़ावे के दुरुपयोग से सम्बन्धित जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए राज्य सरकार से इस मामले में अब तक हुई जांच की प्रगति से दो सप्ताह में अदालत को अवगत कराने के निर्देश दिये हैं।

परिक्रमा

फचैऽक

गौं सभान में सेवा भाव हुंछी, आ्ब स्वार्थ और कमाई खेल
विकासक टैर तो जाम है रौ, गौं गौन में हुनौ गजब खेल
गौं गौन में हुनौ गजब खेल, पब्लिक चौरै द्वि आंख ताणि
बजट एडजस्ट करणी वा्ल, समझनि लोगनि के न जाणि
गौकि सरकार पैंली बटिक, मिलिबेर जन्ताक काम करछी
सिस्टम वां पन बदई गोछ, गौं सभान में सेवा भाव हुंछी।

गणेश पाण्डेय

कांवड़ मेला : हरिद्वार में पार्किंग तैयार

हरिद्वार। श्रावण मास की कांवड यात्रा में प्रशासन की ओर से व्यवस्थित पार्किंग योजना की गई है। मेले के लिये 70 हजार वाहनों की पार्किंग व्यवस्था है, जिसमें ट्रक, टैक्ट्रर, हल्के और दुपहिया वाहन शामिल हैं। प्रशासन ने प्रमुख प्रवेश मोर्गों से आने वाले वालों के आधार पर विभिन्न पार्किंग स्थलों को चिह्नित किया है। दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फर नगर, सहारनपुर, हरियाणा, पंजाब, हिमांचल प्रदेश से आने वाले भारी वाहनों के लिये बैरागी पार्किंग व दक्षद्वीप पार्किंग को मुख्य केन्द्र बनाया गया है। इसकी क्षमता 30 हजार भारी वाहनों की है। यहां से हरकी पैड़ी की दूरी 5 किमी है। कांवड़ लाने वाले दूसरे भारी वाहनों के लिए हरी राम इण्टर कालेज में सौ वाहनों की क्षमता की पार्किंग चिह्नित की गई है।

आदि कैलास में होगी हाई एल्टीट्यूड अल्ट्रा मैराथन, 5 श्रेणियों में प्रतियोगिता

पिथौरागढ़। आदि कैलास क्षेत्र में 24-25 अक्टूबर को हाई एल्टीट्यूड अल्ट्रा मैराथन का आयोजन किया जाएगा। प्रतियोगिता में देशभर से करीब एक हजार धावकों के प्रतिभाग करने की उम्मीद है। आयोजन की तैयारियों को लेकर जिलाधिकारी आशीष कुमार भटगाई ने सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की।

बैठक में जिलाधिकारी ने सभी विभागों को समयबद्ध तरीके से तैयारियां पूरी करने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि मैराथन की शुरुआत ज्योलिकांग से होगी और इसका मार्ग गुंजी सहित आदि कैलास क्षेत्र से होकर गुजरेगा। 70, 42, 21, 10 और 05 किलोमीटर की विभिन्न श्रेणियों में प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। आयोजन को सफल बनाने के लिए आईटीबीपी, सीमा सड़क संगठन (बी आरओ), सेना और सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) का सहयोग लिया जायेगा।

जिलाधिकारी ने जिला पर्यटन अधि कारी को प्रतिभागियों के ठहरने, भोजन और अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं समय पर सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में अपर जिलाधिकारी योगेन्द्र सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. जेएस चुफाल, उप निदेशक पर्यटन अतुल भण्डारी सहित सम्बन्धित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

खनिया-चिलियानौला और चौबटिया को रोपवे से जोड़ने की मांग फिर से होगी

रानीखेत। पूर्व में प्रस्तावित खनिया-चिलियानौला और रानीखेत-चौबटिया को रोपवे से जोड़ने की महत्वाकांक्षी योजना शासन स्तर पर कार्रवाई की हीलहवाली में धरी रह गई। अब स्थानीय जन प्रतिनिधियों और पर्यटन कारोबारियों ने परियोजना को फिर से शुरू करने की मांग तेज कर दी है।

ऐसे में चिलियानौला नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष अरुण रावत ने रुचि लेते हुए बताया कि रोपवे परियोजना से सम्बन्धित पुराने अभिलेख और प्रस्ताव एकत्र किए जा रहे हैं। इसके बाद पालिका की ओर से शासन को प्रस्ताव भेजकर फिर से इस मांग को उठाया जायेगा। इससे चिलियानौला और रानीखेत दोनों क्षेत्रों में पर्यटन को बड़ा लाभ मिलेगा।

क्षेत्र के पर्यटन व्यवसाय से जुड़े लोगों का कहना है कि हर वर्ष बड़ी संख्या में पर्यटक यहाँ पहुँचते हैं लेकिन नए आकर्षण विकसित नहीं होने से पर्यटन को अपेक्षित गति नहीं मिल पा रही है। कुमाऊँ मण्डल विकास निगम के पूर्व निदेशक सदस्य डी. एन.बडोला ने बताया कि खनिया-चिलियानौला रोपवे परियोजना का प्रस्ताव पूर्व में सरकार को भेजा गया था और इसकीकी योजनाा भी तैयार थी लेकिन शासन स्तर पर ठोस कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने परियोजना को पुनर्जीवित करने के लिये सरकार को दोबार पत्र भेजकर जल्द निर्माण कार्य शुरू कराने की मांग की है। होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष हिमांशु उपाध्याय का कहना है कि रानीखेत व आसपास के धार्मिक व प्राकृतिक स्थल पर्यटकों को आकर्षित करते हैं लेकिन मनोरंजन और आधुनिक पर्यटन सुविधाओं की कमी महसूस होती है। इसके लिये रोपवे और हिमालय दर्शन केन्द्र जरूर है, इससे नई दिशा मिलेगी।

विस चुनाव की तैयारियां, ईवीएम पहुंचने के अलावा तैयार किया प्लानर

देहरादून। राज्य में चल रहे विशेष्ज्ञ गहन पुनरीक्षण के बीच आगामी विधान सभा चुनाव की तैयारियां शुरू हो गई है। पहले से उपलब्ध ईवीएम के अलावा बिहार से 2500 बैलेट यूनिट, 6000 वीवीपैट और 12500 कंट्रोल यूनिट पहुंच चुकी हैं। मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय ने प्लानर तैयार कर लिया है। इससे लगता है कि अगले महीने डीईओ, आरओ व अन्य अधिकारियों का 5 दिवसीय प्रशिक्षण होगा।

बताया गया है कि जिलावार चुनाव के लिए ईवीएम की तैयारी की जा रही है। पिछले लोकसभा चुनाव के बाद उपलब्धता देखी जाए तो राज्य में 25697 वीवीपैट, 27700 बैलेट यूनिट और 26553 कंट्रोल यूनिट उपलब्ध हैं। बिहार से मंगाई गई ईवीएम को भी जिलेवार भेज दिया गया है। चुनाव आयोग के प्लानर के अनुसार सितम्बर-अक्टूबर में इन सभी ईवीएम की प्रथम स्तर की जाँच प्रदेश भर में की जाएगी।

जिन मशीनों में खराबी होगी, उन्हें पहले ही पूरी प्रक्रिया से अलग कर दिया जाएगा। इसके बाद बची हुई ईवीएम को स्ट्रांग रूम में सहेजकर रख दी जाएंगी।

चुनाव आयोग सितम्बर-अक्टूबर में चुनाव पूर्व तैयारियों के तहत सभी जिला निर्वाचन अधिकारी, रिटर्निंग अफसर के साथ ही राजनीतिक दलों व अन्य सेल का प्रशिक्षण भी शुरू हो जाएगा। इसके साथ ही जिलावार व्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं चुनाव भागीदारी बढ़ाने का प्लान भी तैयार हो जाएगा। मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय से मिली जानकारी अनुसार प्लानर तैयारी द्रुत हैं।

हल्द्वानी में रिंग रोड परियोजना का सर्वे कार्य अन्तिम चरण में

हल्द्वानी। रिंग रोड परियोजना से जुड़ा सर्वे कार्य अन्तिम चरण में है। 18 किमी लम्बी सड़क के निर्माण के लिये 75 हेक्टेयर वनभूमि हस्तान्तरण की जरूरत बताई जा रही है। महानगर में पर्यटकों और स्थानीय लोगों को जाम से मुक्ति के लिये 2017 में तत्कालीन सीएम त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने इस परियोना की घोषणा की थी। सर्वे को लेकर निजी कम्पनी का चयन कर उसे 1.37 करोड़ का भुगतान भी किया गया लेकिन यह प्रोजेक्ट ठण्डे बस्ते में चला गया। 2024 में फिर से इसकी फाइल खुली। सचिव स्तर पर भाखड़ा पुल से रामपुर रोड बेलबाबा को जोड़ने की बात चली लेकिन निजी जमीन के अधिग्रहण की बात पर ग्रामीण नाराज हो गये। इसके बाद प्रस्ताव बदल कर भाखड़ा पुल से फायर लाइन होते हुए रिंग रोड को जंगल क्षेत्र से बनाने का निर्णय हुआ। अप्रैल 2026 में दिल्ली की एक निजी कम्पनी को चुना गया। बताया जाता है कि अब सर्वे में इस रोड निर्माण के लिये 75 हेक्टेयर वनभूमि हस्तान्तरण के साथ ही करीब सात हजार पेड़ों के कटान की स्थिति है।

तामली में पेयजल योजना शुभारम्भ

चम्पावत। मुख्यमंत्री घोषणा के क्रम में तामली ग्राम समूह पम्पिंग पेयजल योजना का शुभारम्भ हुआ। 1457.21 लाख रुपये की लागत वली इस योजना का शुभारम्भ दर्जा राज्यमंत्री श्याम नारायण पाण्डेय, मुकेश महराना, पेयजल निगम के अधि शासी अभियन्ता अशोक स्वरूप ने किया। इस योजना के पूर्ण होने पर तामली व आसपास स्वच्छ जल उपलब्ध होगा।

कैलास मानसरोवर यात्रा जारी

टनकपुर/धारचूला। कैलास मानसरोवर यात्रा जारी है। कुमाऊं मण्डल विकास निगम द्वारा संचालित यात्रा दलों को दिल्ली से रवाना किया जा रहा है। इन दलों का टनकपुर में स्वागत के बाद निश्चित रूट से धारचूला होते हुए यात्रा हेतु भेजा जा रहा है। इस समय तक 8 दल क्रम से परिक्रमा कर रहे हैं। शुरूआती दलों की वापसी भी होने लगी है। मौसम देखते हुए सीमान्त क्षेत्र में प्रशासन ने अतिरिक्त व्यवस्था की है ताकि यात्रा सकुशल संचालित होती रहे।

नन्दाष्टमी मेले की तैयारियां चारों ओर

डीडीहाट/अल्मोड़ा। सितम्बर माह में होने वाले नन्दादेवी मेले के लिये चारों ओर तैयारियां चल रही हैं। डीडीहाट में होने वाले नन्दा महोत्सव को लेकर आयोजक जुट चुके हैं। नवीन टोलिया ने मंचीय प्रस्तुतियों को लेकर सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार किया है। परम्परागत मेले के रूप में अल्मोड़ा सहित नैनीताल, बागेश्वर सभी जगह कमेटियां गठित कर तैयारी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

अब यादों में रहेंगे भगवती प्रसाद जोशी

बेरीनाग का पुड़ियाग स्टेट प्रयोगशाला बनाकर प्रेरित करता रहा है

डॉ. पंकज उप्रेती

बेरीनाग क्षेत्र के प्रतिष्ठित परिवार और सम्मानित गुरु भगवती प्रसाद जोशी 19 जुलाई 2026 इस लोक से विदा हो गये। गढ़तिर के पुड़ियाग स्टेट को प्रयोगशाला बनाकर अपने शिष्यों और समाज को प्रेरित करने वाले जोशी जी ईमानदार और अक्खड़ स्वभाव के थे।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य के अलावा जोशी जी का विराट व्यक्तित्व था। उद्भट विद्वान, सटीक मार्गदर्शक और ग्रामीण पर्वतीय जीवन संस्कृति से गहरा लगाव रखने वाले प्रकृति संरक्षक एवं पर्यावरण प्रेमी भगवती प्रसाद जोशी जी सिद्धान्तों पर चलने वाले व्यक्ति थे। उनके कड़क मिजाज और सहयोग का संगम ऐसा था कि उनके संरक्षण में रहे सैकड़ों विद्यार्थी हमेशा याद करते रहेंगे। वह शिक्षा को साक्षर बनाने के अलावा लोक संस्कृति से जोड़ने का उपाय मानते थे। उन्हें इतिहास भूगोल सम्बन्धी गूढ़ जानकारियां थी जिससे वह जिज्ञासुओं और शोधार्थियों का मार्गदर्शन करते रहे। शिक्षण कार्य के अलावा प्रकृति से अगाध लगाव रखने वाले जोशी जी ने अपने आवास तक सड़क आने का विरोध कर दिया था। बेरीनाग के दूरस्थ क्षेत्र गढ़तिर में सड़क का प्रस्ताव आते ही इन्हें प्रकृति की चिन्ता होने लगी। खैर, इसके बाद पुड़ियाग स्टेट के लिये सड़क की बात हुई तब भी यह अड़ गये। साग सब्जी उत्पादन के लिये बेहद मेहनती बोरा परिवार इस स्टेट के पास रहते हैं और चाह रखी कि गुरु जी चाहें तो रोड आ सकती है लेकिन जोशी जी मनाही कर देते। पुड़ियाग स्टेट जाने के कठिन रास्ते में यदि कोई आपात स्थिति हो तो और भी ज्यादा कठिनाई होती है लेकिन जोशी जी का प्रकृति लगाव था ही ऐसा। वह हमेशा फावड़ा-दरांती- कृषि औजारों के साथ खेतों में चले जाते और भरपूर पसीना बहाते। उनकी दिनचर्या में परिवार भी शामिल था। उन्होंने पुड़ियाग स्टेट को ऐसी प्रयोगशाला बना दिया जो दूसरों को प्रेरणा देता है।

भगवती प्रसाद जोशी-श्रीमती रमा जोशी

अपने शिक्षक धर्म के अनुसार पर विद्यार्थियों से जितना लगाव रखते थे उतना ही ग्रामीण जीवन से। धर्म-कर्म की परम्परा पर चलते हुए वह उन सारे संस्कारों को मान्यता देते रहे जो पहाड़ में प्रचलित हैं लेकिन अकर्मण्य और चापलूसों से उन्हें सख्त नफरत थी। वह कहते- जब हम अपनी प्रकृति से प्रेम करेंगे, ईमानदारी से रहेंगे, समाज को कुछ देते रहने की मंशा रखेंगे और देंगे तभी जीवन सार्थक होगा। उनकी दिनचर्या में सुबह जागने से लेकर रात्रि तक जागृत रहती। सुबह पूजा-पाठ के बाद वह अध्यात्म व अन्य विषयों की पुस्तकों

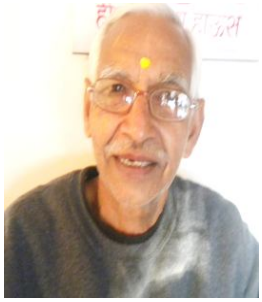

का अध्ययन करते और आने वालों से भेंट करते। इस बीच भोजनादि का निश्चित समय के अलावा खेतों को संवारने के लिये लगे रहते। सर्व साधन सम्पन्न होने के बावजूद उन्हें किसी प्रकार की लालसा नहीं रही लेकिन इस बात से बेहद चिन्तित थे कि पहाड़ से पलायन हो रहा है। वह अकर्मण्य बैठे युवाओं को खेतीबाड़ी, घरेलू कुटीर उद्योगों के लिये प्रेरित करते थे। उनकी प्रेरणा से कई परिवारों ने साग-सब्जी के कारोबार को बढ़ाया और सफल हैं। उनका व्यक्तित्व था ही ऐसा जो उन्हें ऋषियों की श्रेणी में रखने को पर्याप्त है। स्वध्याय, प्रकृति प्रेम, जनहित में कार्य करने वाले अपनने वरिष्ठ सदस्य भगवती प्रसाद जोशी को पिघलता हिमालय परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

सुरेश मेडिकल स्टोर
नियर- टैक्सी स्टैंड
मदकोट रोड
मुनस्यारी
मो.- 8077929044, 9756822576

HIMALAYAN
MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav,
Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

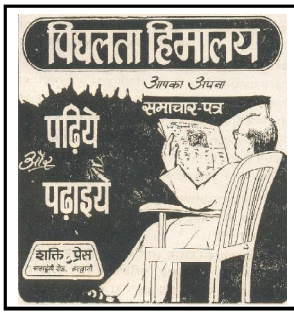

कला
संस्कृति
विचार
राजनीति
के साथ ही
अपने हिमालय
की आवाज

हल्द्वानी में रास्ता और फुटपाथ पहले ही कब्जा हो चुका है

शिकायत के बाद प्रशासन बाहर निकला

हल्द्वानी। मुखानी की नहर कवरिंग रोड से लेकर क्रियाशाला तक रास्ता और फुटपाथ पहले ही कब्जा हो चुका है और अतिक्रमण के खिलाफ सख्ती की बात करने वाला प्रशासन घुप्पी बना रहा। फुटपाथ पर धनबल वालों ने अपने निजी पक्के निर्माण के लिये कंक्रीट बिछवा दिये। इसके अलावा नहर से लगी जमीन घेरकर भवन खड़े किये जा चुके हैं। यह कब्जे एक-दो दिन में नहीं हुए बल्कि इनके निर्माण में काफी समय लगा और देखा-देखी सभी ने नहर व गूल के बीच की पूरी भूमि हड़प ली। इस भूमि की सच्चाई क्या है यह तो सरकारी रिकार्ड बता ही देंगे। लेकिन इतना तो साफ दिखाई दे रहा है कि बहुत ही बेशर्मी से अतिक्रमण हुए।

इस बीच सामाजिक कार्यकर्ता दीप पाण्डे ने बराबर अतिक्रमण के खिलाफ आवाज उठाते हुए प्रशासन को जगाया और बताया कि फुटपाथ घिरने से दुर्घटनाएं हो रही हैं। सीएम पोर्टल में भी शिकायत की और सोशल मीडिया में लगातार अपनी बात रखते हैं। इसके बाद प्रशासन बाहर निकला और अतिक्रमण वाले कुछ जगहों पर लाल निशान लगा दिये हैं।

फुटपाथ पर अतिक्रमण की बात सामने आने पर लोनिवि और तहसील की टीम मुखानी नहर कबरिंग रोड में आई और फीता लेकर विवेकानन्द और रेडियंस जैसे बड़े निजी अस्पतालों के सामने नपाई कर डाली। कब्जाई भूमि पर लाल निशान भी लगाए और चेतावनी दी कि अतिक्रमणकारियों को छोड़ा नहीं जायेगा। लेकिन देखने में आया कि सड़क पर ठेले व खोमचे हटाने में ताकत दिखाने वाला प्रशासन इन बड़े अतिक्रमणों को हटाने में काफी समय ले रहा था। इससे साफ हो गया कि नहर से लगे अतिक्रमण हटाने इतने आसान नहीं हैं। इतना जरूर है कि दीप चन्द्र पाण्डे की हिम्मत के बाद मुख्य सड़क से लेकर फुटपाथ को साफ कर दिया जायेगा।

यदि मुखानी चौराहे से अतिक्रमण हटाने की मुहीम चले तो बड़े-बड़े नामी इसकी चपेट में आ सकते हैं क्योंकि नहर कबरिंग के दौरान ही मकान-दुकान निर्माण का बड़ा खेल चला और रातों रात बुनियादें डाली जाने लगी और सरकारी भूमि में गूल तक दब गई। दबंगता का हाल यह है कि यदि एक को छेड़ा जायेगा तो वह दूसरे का उदाहरण देगा। इन हालातों सब चुपचाप हैं, प्रशासन की क्या मजाल। इसके अलावा क्रियाशाला क्षेत्र में बाहर से आकर मुख्य सड़क पर ठेलों की भरमार ने लोगों का चलना दूभर कर दिया है।

शिक्षा मंत्री की ससुराल का स्कूल बदहाल

चेयरमैन बोले- हमें गोद दे दीजिए, हालत सुधारेंगे

हल्द्वानी/लालकुआ। प्रदेश के शिक्षा मंत्री धन सिंह रावत के ससुराल से जुड़े सरकारी विद्यालयों की बदहाली सुर्खियों में है। लालकुआ नगर पंचायत अध्यक्ष सुरेन्द्र सिंह लोटनी ने शिक्षा मंत्री से राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय और राजकीय प्राथमिक विद्यालय ग्राम को नगर पंचायत को गोद देकर उसके पुनर्निर्माण की अनुमति मांगी है। उनका कहना है कि यदि सरकार अनुमति दे दे, तो नगर पंचायत अपने संसाधनों से इन विद्यालयों की सूरत बदलने को तैयार है।

नगर पंचायत अध्यक्ष द्वारा शिक्षा मंत्री को भेजे गये पत्र में बताया गया है कि दोनों विद्यालय एक ही परिसर में संचालित हो रहे हैं लेकिन अव्यवस्थित निर्माण के कारण करीब चार बीघा परिसर पूरी तरह बिखरा हुआ है। हालात ऐसे हैं कि बच्चों के खेलने तक के लिए पर्याप्त मैदान नहीं बचा है। पत्र में सुझाव दिया गय है कि कक्षा 6 से 8 तक संचालित कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय को मात्र 50 मीटर दूर स्थित रा.कन्या इण्टर कालेज में समाहित कर दिया जाए। इससे प्रा. विद्यालय के बच्चों के पास पर्याप्त जगह उपलब्ध होगी और सुव्यवस्थित परिसर के साथ खेल मैदान विकसित होगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं
के साथ-

SIDDHI VINAYAK SOLVENT LLP

ELDECO

Sidcul Industrial Park

Sitarganj

(U.S.Nagar)

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चौकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379
APNA GHAR 6396098804
चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया
YOGA
MEDITATION
HOMELY
FOOD
LIVE
MUSIC
BIRTHDAY
WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल
9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)